International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 6.924 Volume 10, Issue 04, Aug 2023
Website- www.aarf.asia, **Email** : editoraarf@gmail.com

असहमति का निर्माण: सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को बढ़ावा देने में सोशल मीडिया और फेक न्यूज की भूमिका

घनश्याम बीठू

सहायक आचार्य, दर्शनशास्त्र

राजकीय डूंगर महाविद्यालय बीकानेर

सार

सोशल मीडिया की उपस्थिति ने समाज के संचार को नई दिशा दी है, लेकिन इसके साथ ही फेक न्यूज की प्रबलता ने असहमति और विभाजन को बढ़ावा दिया है। यह अध्ययन सोशल मीडिया और फेक न्यूज के संयोजन के द्वारा सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को कैसे प्रभावित कर रहे हैं, उसे विश्लेषित करता है। यहाँ, हम उनके संबंध को पूर्वानुमानित करते हैं, जो कैसे सोशल मीडिया प्लेटफार्म और फेक न्यूज की भूमिका सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को प्रभावित कर रही है। इस अध्ययन के माध्यम से हम उन विभिन्न प्रक्रियाओं को समझने का प्रयास करते हैं, जो लोगों के बीच असहमति का निर्माण करते हैं, और सोशल मीडिया और फेक न्यूज के रोल को समझते हैं जैसा कि यह विवेचना करता है कि कैसे यह तकनीकी माध्यम विभिन्न धार्मिक, भाषाई और क्षेत्रीय समृद्धि के प्रति लोगों की धारणाओं को प्रभावित करते हैं। इस अध्ययन के माध्यम से, हम उन सांस्कृतिक राष्ट्रवादी मूल्यों और धारणाओं के अध्ययन में आधुनिक तकनीकी उपकरणों का उपयोग करते हैं जो सोशल मीडिया द्वारा विपरीत प्रसारित किए जा रहे हैं। हम उन नियंत्रणों और उपायों को विचार करते हैं जो यह संदेशों को सत्यापित करने और असहमति को कम करने में सहायक हो सकते हैं।

मुख्या शब्दः *सोशल मीडिया, फेक न्यूज, सांस्कृतिक, राष्ट्रवादी।*

प्रस्तावना

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

सोशल मीडिया की आगमन ने समाज के साथ संचार की नई दिशा बनाई है, लेकिन इसके साथ ही फेक न्यूज के प्रसार की चुनौती भी उत्पन्न हुई है। यहाँ, हम विश्लेषित करेंगे कि कैसे सोशल मीडिया और फेक न्यूज का संयोजन सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को प्रभावित कर रहा है और कैसे इससे असहमति और विभाजन का निर्माण हो रहा है।

सोशल मीडिया और फेक न्यूज ने वर्तमान समय में समाज के रूपरेखा को पूरी तरह से परिभ्रमित कर दिया है। जबकि सोशल मीडिया ने एक नया और संवेदनशील सार्थक संवाद का निर्माण किया है, वहीं फेक न्यूज ने समाज में असहमति और विभाजन का रास्ता खोल दिया है। इस संवाद के संयोजन से प्रारंभिक सामर्थ्य के साथ, सोशल मीडिया ने सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को प्रभावित करने का अवसर प्रदान किया है।

फेक न्यूज का प्रसार सोशल मीडिया के माध्यम से तेजी से बढ़ रहा है और इसका असर सामाजिक रूप से बढ़ते संवाद पर नकारात्मक प्रभाव डाल रहा है। असत्य और भ्रामक सूचनाओं का प्रसार लोगों के धारणाओं और विश्वासों को प्रभावित करता है, जिससे विभाजन और असहमति का माहौल बढ़ता है। इस प्रकार, सोशल मीडिया और फेक न्यूज का संयोजन सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की बदहाली का कारण बन सकता है।

इस विषय पर गहराई से विचार करने के लिए, हमें सोशल मीडिया के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव को विश्लेषण करना चाहिए, साथ ही उन उपायों को खोजना चाहिए जो इसकी नकारात्मक प्रभावों को सीमित कर सकते हैं। साथ ही, फेक न्यूज के खिलाफ सत्यापन और सत्यता की प्रोत्साहना के माध्यम से, हम सामाजिक मीडिया को सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को प्रोत्साहित करने के लिए उपयोगी और सकारात्मक उपकरण के रूप में देख सकते हैं।

सोशल मीडिया के प्रयोग से सामाजिक संवाद के रूप में नई दिशा मिली है, जो सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को बढ़ावा देने में भूमिका निभा सकती है। लेकिन, सोशल मीडिया के अपर्याप्त तथा असत्य सूचनाओं के प्रसार से, एक विभाजित सामाजिक वातावरण उत्पन्न होता है जो सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रति असहमति को बढ़ावा देता है।

फेक न्यूज के उत्पादन और प्रसार में सोशल मीडिया का महत्वपूर्ण योगदान है, जिससे लोगों की धारणाओं को प्रभावित किया जाता है। फेक न्यूज के माध्यम से, असत्य और भ्रामक सूचनाओं को सामाजिक रूप से प्रसारित किया जाता है, जो सांस्कृतिक राष्ट्रवाद में असहमति और विभाजन उत्पन्न करता है।

इस विवेचना के साथ, हमें सोशल मीडिया और फेक न्यूज की दुर्भावनाओं को विश्लेषण करने की जरूरत है और साथ ही, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को प्रोत्साहित करने और विभाजन को कम करने के उपायों को ढूंढने का प्रयास करना

चाहिए। इसके लिए, सत्यापन प्रक्रिया और सत्यता की प्रशिक्षण को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, ताकि सोशल मीडिया एक सकारात्मक सामाजिक विचार के रूप में काम कर सके और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को बढ़ावा दे सके।

अध्ययन का उद्देश्य

1. सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को बढ़ावा देने में सोशल मीडिया की जांच करना
2. तकनीकी माध्यम विविध धार्मिक, भाषाई और क्षेत्रीय समृद्धि का अध्ययन करना

सोशल मीडिया का प्रभाव

सोशल मीडिया ने समाज के संचार को नई दिशा दी है, जहाँ लोग अपने विचारों और धारणाओं को साझा करते हैं। यह सामाजिक संवाद को बढ़ावा देता है और लोगों को अपने विचारों को सार्वजनिक रूप से अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान करता है। हालांकि, यह सामाजिक संवाद अक्सर विवादास्पद होता है और फेक न्यूज, अफवाहें और भ्रामक सूचनाएं इसके माध्यम से प्रसारित होती हैं, जो असहमति और विभाजन को बढ़ावा देती हैं।

सोशल मीडिया ने समाज के संचार माध्यमों को एक नई दिशा दी है। यह आधुनिक युग में लोगों को एक साथ जोड़ने का एक शक्तिशाली माध्यम बन गया है जो सभी को एक ही मंच पर लाता है। सोशल मीडिया का अद्वितीय प्रभाव उसकी अव्याख्यायिकता और गति में है। यह लोगों को अपने विचारों और विचारों को बांटने का एक मंच प्रदान करता है, जिससे विचारों का विस्तार होता है और सामाजिक संवाद में एकता बढ़ती है।

सोशल मीडिया का प्रभाव समाज के अंतरालिक संवाद में एक महत्वपूर्ण बदलाव लाया है। यह लोगों को विभिन्न भागों से एकत्र करता है और उन्हें एक साझा मंच पर आमंत्रित करता है। सोशल मीडिया के माध्यम से, लोग अपने विचारों, विचारों, छवियों, और अन्य सामग्री को साझा कर सकते हैं। यह स्वतंत्रता का एक स्रोत प्रदान करता है और लोगों को उनकी आवाज को सुनने का एक माध्यम प्रदान करता है। इस अद्वितीय प्रभाव के साथ, सोशल मीडिया के प्रयोग के संभावित लाभ और नुकसान को समझने की आवश्यकता है, और उचित नियंत्रण और सत्यापन की आवश्यकता है ताकि सोशल मीडिया एक सकारात्मक सामाजिक साधन के रूप में काम कर सके।

सोशल मीडिया का समाजिक संवाद में योगदान

सोशल मीडिया ने समाजिक संवाद के माध्यमों में एक अद्वितीय परिवर्तन लाया है। यह एक सामूहिक मंच प्रदान करता है जहां लोग अपने विचारों, अनुभवों, और विचारों को साझा कर सकते हैं। सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म्स ने लोगों को

एक नई रूप में संचार करने का और दुनिया भर में व्यापारिक, सामाजिक, राजनीतिक, और सांस्कृतिक समृद्धि के विचारों को साझा करने का माध्यम प्रदान किया है। इसके माध्यम से, लोगों को अपने अंदर छिपी भावनाओं को व्यक्त करने का एक सुरक्षित और साहसिक माध्यम प्राप्त होता है।

सोशल मीडिया का समाजिक संवाद में योगदान न केवल लोगों को एक-दूसरे के साथ जोड़ने में मदद करता है, बल्कि यह विभिन्न समाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक मुद्दों पर चर्चा करने का भी एक मंच प्रदान करता है। इसके माध्यम से, लोग अपने विचार और विचारों को साझा करके सामाजिक सुधार में भागीदारी कर सकते हैं और विभिन्न मुद्दों पर जागरूकता बढ़ा सकते हैं। इसके अलावा, सोशल मीडिया द्वारा लोगों के बीच साझा किए गए अनुभव और संवाद सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देते हैं और एक गहरी संवेदनशीलता की भावना बनाते हैं।

अद्वितीयता और स्वतंत्रता: लोगों के विचारों की प्रकाशनी

अद्वितीयता और स्वतंत्रता लोगों के विचारों की प्रकाशनी के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है। सोशल मीडिया ने एक नया परिदृश्य प्रदान किया है जहां लोग अपने धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक, और व्यक्तिगत विचारों को बेझिझक साझा कर सकते हैं। यह विशेषतः महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे व्यक्तिगत स्वतंत्रता की सामर्थ्य मिलती है और साथ ही समाज के विभिन्न लेयरों में विचारों के विस्तार को प्रोत्साहित किया जाता है।

इस अद्वितीयता के साथ, लोगों को एक नया संवाद का माध्यम प्राप्त होता है जिसमें उन्हें अपने विचारों को स्वतंत्रता से व्यक्त करने का अवसर मिलता है। सोशल मीडिया ने इस स्वतंत्रता को बढ़ावा दिया है और लोगों को समृद्ध सामाजिक चर्चा में शामिल होने के लिए प्रेरित किया है। इसके माध्यम से, लोग अपने विचारों को सार्वजनिक रूप से प्रस्तुत कर सकते हैं और अपने विचारों को अन्य लोगों के साथ साझा करके गहरे संवाद में शामिल हो सकते हैं।

विवाद और असहमति: सोशल मीडिया के विभाजनकारी प्रभाव

सोशल मीडिया का विवाद और असहमति के संदर्भ में महत्वपूर्ण रोल है। जबकि यह लोगों को एक साथ जोड़ता है, वहीं विभाजित समुदायों और विचारों को भी प्रोत्साहित करता है। सोशल मीडिया पर विवाद और असहमति के विषयों पर होने वाले चर्चाएं अक्सर घमंड की ओर बढ़ती हैं, जिससे सामाजिक विभाजन बढ़ सकता है।

इस अद्वितीयता के रूप में, असत्य और भ्रामक सूचनाओं का प्रसार भी सोशल मीडिया के माध्यम से बढ़ गया है, जो विवादों और असहमति को और भी तेजी से फैला सकता है। इस तरह के विभाजनकारी प्रभावों से बचने के लिए, सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म्स और उपयोगकर्ताओं को जिम्मेदारीपूर्ण रूप से काम करना होगा।

सामाजिक संज्ञान: जागरूकता और सामाजिक परिवर्तन

सामाजिक संज्ञान और सामाजिक परिवर्तन का अद्वितीय संबंध सोशल मीडिया के एक्सिस में पाया जा सकता है। सोशल मीडिया के माध्यम से लोग अनेकता, समाजिक न्याय, और समृद्धि के विषयों पर जागरूकता प्राप्त कर सकते हैं और उनके समाज में परिवर्तन को प्रोत्साहित कर सकते हैं।

सोशल मीडिया द्वारा सामाजिक संज्ञान को बढ़ाने का यह एक उपाय है जिससे लोगों को विभिन्न विषयों पर जानकारी प्राप्त करने और उसके बारे में विचार करने का माध्यम मिलता है। यह एक शक्तिशाली और प्रभावी माध्यम है जो समाज में जागरूकता और बदलाव को बढ़ावा देता है।

सोशल मीडिया के सामाजिक उपयोग: अनुभव साझा करने का स्थान

सोशल मीडिया के सामाजिक उपयोग का महत्व विशेषकर अनुभवों को साझा करने के संदर्भ में है। यह एक साझा मंच प्रदान करता है जिस पर लोग अपने अनुभवों, यात्राओं, उत्सवों, और अन्य विशेष क्षणों को साझा कर सकते हैं। इससे लोग अपने जीवन के विभिन्न पहलुओं को दूसरों के साथ साझा करते हैं और एक दूसरे के साथ अपने जीवन के संघर्षों और सफलताओं का हिस्सा बनाते हैं।

सोशल मीडिया के इस सामाजिक उपयोग से लोग एक-दूसरे के साथ जुड़ सकते हैं और एक साथ अनुभवों को बांट सकते हैं, जिससे सामूहिक एकता और समरसता में वृद्धि होती है। इसके अलावा, यह सामाजिक उपयोग भी सामाजिक सहयोग और समरसता को बढ़ावा देता है, जिससे लोग एक दूसरे के साथ साझा करते हैं और एक-दूसरे की मदद करते हैं।

फेक न्यूज का प्रभाव

फेक न्यूज का उत्पादन और प्रसार आज सामाजिक मीडिया के माध्यम से अधिक हो रहा है। यह फेक न्यूज आम लोगों की धारणाओं और विचारों को प्रभावित करती है और सामाजिक संवाद को विकृत करती है। इसके परिणामस्वरूप, लोग अक्सर असहमति और विवादों में आ जाते हैं, जो समाज को विभाजित करता है और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रभाव को कमजोर करता है।

फेक न्यूज का प्रभाव आजकल सामाजिक मीडिया पर एक महत्वपूर्ण मुद्दा बन गया है। फेक न्यूज का प्रसार न केवल समाज में असहमति और अस्थिरता को बढ़ा सकता है, बल्कि यह विश्वास की कमी के कारण सामाजिक विभाजन को भी प्रोत्साहित कर सकता है।

फेक न्यूज के प्रसार से लोगों के बीच विश्वास की कमी आ सकती है, जो सामाजिक संबंधों को क्षणिकता के स्तर पर रख सकता है। यह समूहों के बीच असहमति को बढ़ा सकता है और समाज में विभाजन बढ़ा सकता है। फेक न्यूज का प्रसार सामाजिक और राजनीतिक प्रक्रियाओं को भी प्रभावित कर सकता है। इससे विश्वासघात, अस्थिरता, और विभाजन की स्थितियों में वृद्धि हो सकती है, जिससे सामाजिक और राजनीतिक स्थितियों में समाधान और संबंधों में संकट उत्पन्न हो सकता है।

फेक न्यूज का सामाजिक संघर्ष पर प्रभाव

फेक न्यूज का सामाजिक संघर्ष पर प्रभाव एक महत्वपूर्ण विषय है जो समाज में गहरा अस्थिरता और असंतोष को उत्पन्न कर सकता है। यह सामाजिक मीडिया पर प्रसारित असत्य या भ्रामक जानकारी के कारण आता है, जिससे लोगों के बीच भ्रम और असहमति बढ़ती है। फेक न्यूज के प्रसार से, विभिन्न समूहों के बीच विचार और अपनी धारणाओं पर अत्यधिक संवाद और संघर्ष होता है। इससे सामाजिक संघर्ष का अधिक बढ़ जाना संभव है, जिससे समाज में विभाजन और असहमति का माहौल उत्पन्न हो सकता है।

फेक न्यूज के प्रसार के कारण समाजिक संघर्ष की गहरी गर्त में गिरने का खतरा होता है। यह संघर्ष न केवल लोगों के बीच असहमति बढ़ाता है, बल्कि वे अपने विचारों और धारणाओं पर भरोसा कम करते हैं। सामाजिक मीडिया पर फैली असत्य जानकारी और फेक न्यूज के प्रसार से लोगों के बीच विश्वास की कमी होती है, जिससे सामाजिक संघर्ष और असहमति का माहौल बनता है। इससे सामाजिक सांघर्षिकता और संघर्ष की स्थिति में वृद्धि होती है, जो समाज के लिए असंतुलन और अस्थिरता का कारण बन सकता है।

विश्वास की कमी: समाज में अस्थिरता का उत्पन्न होना

विश्वास की कमी एक महत्वपूर्ण समस्या है जो समाज में अस्थिरता का मुख्य कारण बनती है। जब लोग आपस में और अपनी सरकार, मीडिया, और अन्य संगठनों पर भरोसा नहीं करते हैं, तो समाज में एक संकट की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। यह विश्वास की कमी उत्पन्न होती है जब सार्वजनिक नीतियों, सांस्कृतिक मान्यताओं, और लोगों के बीच विश्वासघात और संदेह का माहौल बनता है।

विश्वास की कमी समाज में अस्थिरता को बढ़ा सकती है, जो विभिन्न क्षेत्रों में असंतोष, संघर्ष, और असुरक्षा का संकेत हो सकता है। जब लोग सरकार, मीडिया, और अन्य संगठनों के संदर्भ में अद्वितीयता और सत्यता पर संदेह

करते हैं, तो उनके बीच में विश्वास की कमी होती है। इससे समाज के भीतर विभिन्न समूहों के बीच विश्वास की कमी के परिणाम सामाजिक संघर्ष, विभाजन, और अस्थिरता की स्थिति को बढ़ा सकते हैं।

राजनीतिक प्रक्रियाओं पर फेक न्यूज का प्रभाव

फेक न्यूज का प्रसार राजनीतिक प्रक्रियाओं पर गहरा प्रभाव डाल सकता है, क्योंकि यह लोगों के ध्यान को भ्रामित करता है और नकली तथ्यों का प्रसार करके राजनीतिक निर्णयों पर असर डाल सकता है। फेक न्यूज के द्वारा लोगों के विचारों को मोड़ा जा सकता है और उन्हें गलत दिशा में ले जाया जा सकता है, जिससे वे गलत निर्णय ले सकते हैं।

फेक न्यूज के प्रसार से, लोगों की राजनीतिक जागरूकता में कमी होती है और उन्हें गलत या असत्य जानकारी के आधार पर निर्णय लेने की संभावना होती है। यह नकली समाचार और असत्य जानकारी का प्रसार राजनीतिक प्रक्रियाओं को प्रभावित करके लोगों की राय और मतभेदों पर असर डाल सकता है, जिससे वे सही निर्णय नहीं ले पाते हैं और निरंतर विभाजन के माहौल में रहते हैं।

जनसाधारण की अवगति में असत्यता: फेक न्यूज का प्रभाव

जनसाधारण की अवगति में असत्यता का प्रसार एक गंभीर समस्या है जो फेक न्यूज के माध्यम से होता है। यह असत्य जानकारी लोगों की धारणाओं और सोच को प्रभावित करती है, जिससे वे गलत समझने में पड़ सकते हैं और अवस्था के प्रति असहानुभूति कर सकते हैं। फेक न्यूज के प्रसार से, जनसाधारण को सही जानकारी के अभाव में गलत धारणाओं के प्रति अनुभव हो सकता है।

फेक न्यूज का प्रसार जनसाधारण की अवगति में असत्यता को बढ़ा सकता है, जिससे लोग समाज में अस्थिरता के बारे में गलत धारणाओं में पड़ सकते हैं। यह असत्य जानकारी लोगों को गलत दिशा में ले जाने के लिए प्रेरित कर सकती है, जिससे वे सही और सत्य जानकारी की खोज में सक्षम नहीं रहते हैं। इससे समाज में असंतोष और अस्थिरता की स्थिति बढ़ सकती है, जो लोगों के बीच असहमति और विभाजन का कारण बन सकती है।

निष्कर्ष

सामाजिक मीडिया और फेक न्यूज की भूमिका असहमति का निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान करती है। इन तकनीकी माध्यमों के माध्यम से विश्वास की कमी, असत्यता और अस्थिरता का विस्तार होता है, जो सामाजिक संघर्ष को बढ़ाता है। इस असहमति के माहौल में, सामाजिक विभाजन बढ़ सकता है और राष्ट्रीय एकता पर असर डाल सकता

है। इस समस्या का समाधान साझा जिम्मेदारी के साथ हो सकता है। सामाजिक मीडिया प्लेटफॉर्म्स को सत्य और विश्वसनीयता को बढ़ावा देने के लिए जागरूकता प्रोत्साहित करना चाहिए, जबकि उपयुक्त अनुसंधान और विवेचन के माध्यम से फेक न्यूज के प्रसार को रोकने की जरूरत है। एक सकारात्मक और उद्दीपनात्मक समाज के निर्माण के लिए, सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म्स को अपनी जिम्मेदारियों को निभाने में सक्षम होना चाहिए और सत्य और विश्वसनीयता के मानकों को प्रोत्साहित करना चाहिए। समाज में असहमति को दूर करने के लिए, हमें सत्य और विश्वसनीयता के मानकों को बढ़ावा देने के लिए संगठन की आवश्यकता है। इसके साथ ही, लोगों को सत्य के लिए साक्षात्कार करने के लिए उत्साहित किया जाना चाहिए, ताकि वे असत्यता के साथ सामान्य रूप से समझौता न करें और सत्य की प्राथमिकता को स्वीकार करें। इस प्रकार, सोशल मीडिया और फेक न्यूज के द्वारा सामाजिक संघर्ष का माहौल कम किया जा सकता है और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को बढ़ावा दिया जा सकता है।

संदर्भ

1. अबूज़ीद ए, ग्रैनमो ओसी, वेबरसिक सी, गुडविन एम. हॉक्स प्रक्रियाओं के माध्यम से ऑटोमेटा-आधारित गलत सूचना शमन सीखना। सूचना प्रणाली फ्रंटियर्स. 2021;23(5):1169–1188। डीओआई: 10.1007/एस10796-020-10102-8।
2. अफ्रीस, डब्ल्यू.आर.ओ. (2020)। एफ। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) अफ्रीकी क्षेत्र में संपर्क अनुरेखण या सीओवीआईडी -19 पर तकनीकी मार्गदर्शन। 19 मई 2020 को एक्सेस किया गया।
3. अग्रवाल आर, गोपाल आर, शंकरनारायणन आर, सिंह पीवी। ब्लॉग, ब्लॉगर और फर्म: क्या नकारात्मक कर्मचारी पोस्ट सकारात्मक परिणाम दे सकते हैं? सूचना प्रणाली अनुसंधान. 2012;23(2):306–322। डीओआई: 10.1287/आईएसआरई.1110.0360।
4. अग्रवाल आर, सिंह एच. निर्णय लेने के विभिन्न चरणों में ब्लॉगों का विभेदक प्रभाव: उद्यम पूंजीपतियों का मामला। (रिपोर्ट) मिस क्वार्टरली। 2013;37(4):1093. डीओआई: 10.25300/एमआईएसक्यू/2013/37.4.05।

5. अरशद एम, इस्लाम एस, खालिक ए. पावर ट्रांसफार्मर प्रबंधन और निर्णय लेने में फ़ज़ी लॉजिक दृष्टिकोण। डाइलेक्ट्रिक्स और इलेक्ट्रिकल इन्सुलेशन पर आईईईई लेनदेन। 2014;21(5):2343-2354। डीओआई: 10.1109/टीडीईआई.2014.003859।

6. औ सीएच, हो केकेडब्ल्यू, चिउ डीकेडब्ल्यू। वैचारिक ध्रुवीकरण में ऑनलाइन गलत सूचना और फर्जी खबरों की भूमिका: बाधाएं, उत्प्रेरक और निहितार्थ। सूचना प्रणाली फ्रंटियर्स. 2021 डीओआई: 10.1007/एस10796-021-10133-9।

7. बैरेट एम, ओबॉर्न ई, ऑर्लिकोव्स्की डब्ल्यू। ऑनलाइन समुदायों में मूल्य बनाना: रणनीति, मंच और हितधारक जुड़ाव की सामाजिक सामग्री का विन्यास। सूचना प्रणाली अनुसंधान. 2016;27(4):704-723। doi: 10.1287/isre.2016.0648।

8. बाउर ए. व्यापार, सरकार और सार्वजनिक प्रशासन में लोगों की राय में अंतर्दृष्टि बढ़ाने के लिए सामाजिक वेब का उपयोग करना। सूचना प्रणाली फ्रंटियर्स. 2017;19(2):231-251। डीओआई: 10.1007/एस10796-016-9681-7।

9. बर्कोविट्ज़ डी, श्वार्टज़ डीए। माइली, सीएनएन और द ओनियन। पत्रकारिता अभ्यास. 2016;10(1):1-17. डीओआई: 10.1080/17512786.2015.1006933।

10. ब्रेनन बी. झूठ, भ्रामक प्रचार और फर्जी खबरों की समझ बनाना। जर्नल ऑफ़ मीडिया एथिक्स. 2017;32(3):179-181। डीओआई: 10.1080/23736992.2017.1331023।

11. ब्रुमेट जे, डिस्टासो एम, वाफियाडिस एम, मेस्नर एम। इसके बारे में सब कुछ पढ़ें: ट्विटर पर "फेक न्यूज़" का राजनीतिकरण। पत्रकारिता एवं जनसंचार त्रैमासिक. 2018;95(2):497-517। डीओआई: 10.1177/1077699018769906।

12. काओ एक्स, गुओ एक्स, लियू एच, गु जे। ज्ञान एकीकरण के समर्थन में सोशल मीडिया की भूमिका: एक सामाजिक पूंजी विश्लेषण। सूचना प्रणाली फ्रंटियर्स. 2015;17(2):351-362। डीओआई: 10.1007/एस10796-013-9473-2।

13. सेंटेनो आर, हर्मोसो आर, फास्ली एम. संख्यात्मक रेटिंग की अशुद्धि पर: सामाजिक नेटवर्क में पक्षपाती राय से निपटना। सूचना प्रणाली फ्रंटियर्स. 2015;17(4):809-825। डीओआई: 10.1007/एस10796-014-9526-1।

14. चांग आईसी, लियू सीसी, चेन के. सोशल नेटवर्किंग साइटों के लिए वर्चुअल माइग्रेशन में पुश, पुल और मूरिंग प्रभाव। सूचना प्रणाली जर्नल. 2014;24(4):323-346। डीओआई: 10.1111/आईएसजे.12030।

15. चांग डब्लूएल, डियाज़ ए, हंग पी. विश्वास मूल्य का अनुमान: एक सामाजिक नेटवर्क परिप्रेक्ष्य। सूचना प्रणाली फ्रंटियर्स. 2015;17(6):1381-1400। डीओआई: 10.1007/एस10796-014-9519-0।

16. चेन एच, डी पी, हू वाईजे। सोशल मीडिया में आईटी-सक्षम प्रसारण: कलाकारों की गतिविधियों और संगीत बिक्री का एक अनुभवजन्य अध्ययन। सूचना प्रणाली अनुसंधान. 2015;26(3):513-531। doi: 10.1287/isre.2015.0582.